अभ्यास पत्रक

पाठ: 9 - आदमी का अनुपात

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

---

1. निम्नलिखित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही उत्तर चुनें। (5 अंक)

(i) विराट ब्रह्मांड में अपनी छोटी सी जगह होने के बावजूद, आदमी किन भावों में लीन रहता है?

(क) प्रेम, करुणा, दया (ख) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा

(ग) शांति, संतोष, भक्ति (घ) वीरता, साहस, शौर्य

(ii) कवि के अनुसार आदमी क्या उठाता है?

(क) पत्थर के घर (ख) संख्यातीत शंख सी दीवारें (ग) भारी बोझ (घ) ऊँचे पर्वत

(iii) आदमी स्वयं को दूसरे का क्या बताता है?

(क) मित्र (ख) सेवक (ग) भाई (घ) स्वामी

(iv) "देशों की कौन कहे" - आदमी एक कमरे में ही क्या कर लेता है?

(क) दो घर बना लेता है (ख) दो दुनिया रचाता है

(ग) दो भगवान बना लेता है (घ) दो रास्ते बना लेता है

(v) 'संख्यातीत शंख सी दीवारें' किसका प्रतीक हैं?

(क) सुरक्षा और मजबूती का

(ख) मनुष्य द्वारा बनाए गए अनगिनत बँटवारों और सीमाओं का

(ग) समुद्र के किनारों का

(घ) विशाल इमारतों का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें। (5 अंक)

(i) ब्रह्मांड के विराट अनुपात को जानने के बाद भी आदमी किन बुरी भावनाओं से ग्रस्त है? (कोई दो लिखें)

उत्तर- .....

(ii) कवि के अनुसार आदमी क्या बनने का ढोंग करता है?

उत्तर- .....

(iii) दीवारों की तुलना किससे की गई है?

उत्तर- .....

(iv) कवि ने आदमी की किस प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है जो वह एक छोटे से कमरे में भी करता है?

उत्तर- .....

(v) इस कविता का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर- .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। (3 x 2 = 6 अंक)

(i) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है" - इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .....

.....

(ii) "अपने को दूजे का स्वामी बताता है" - यह पंक्ति मनुष्य के किस स्वभाव को दर्शाती है?

उत्तर- .....

.....

(iii) "एक कमरे में दो दुनिया रचाता है" - इस कथन से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- .....

.....

4. निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर विस्तार से दें। (4 अंक)

(i) कविता के दूसरे भाग में कवि ने मनुष्य के विरोधाभासी चरित्र पर टिप्पणी की है। एक तरफ ब्रह्मांड में उसका अस्तित्व बहुत छोटा है, तो दूसरी तरफ उसका अहंकार बहुत बड़ा। कविता के आधार पर इस विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

उत्तर कुंजी (वर्कशीट - 2)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न:

(i) (ख) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा

(ii) (ख) संख्यातीत शंख सी दीवारें

(iii) (घ) स्वामी

(iv) (ख) दो दुनिया रचाता है

(v) (ख) मनुष्य द्वारा बनाए गए अनगिनत बँटवारों और सीमाओं का

2. एक वाक्य में उत्तर:

(i) ब्रह्मांड के विराट अनुपात को जानने के बाद भी आदमी ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ और घृणा जैसी बुरी भावनाओं से ग्रस्त है।

(ii) कवि के अनुसार आदमी दूसरे का स्वामी बनने का ढोंग करता है।

(iii) दीवारों की तुलना संख्यातीत (अनगिनत) शंखों से की गई है।

(iv) कवि ने आदमी की बँटवारा करने और अलगाव पैदा करने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

(v) इस कविता का मुख्य संदेश है कि मनुष्य को ब्रह्मांड की विशालता को देखकर अपना अहंकार त्याग देना चाहिए।

3. संक्षिप्त उत्तर:

(i) इस पंक्ति का आशय है कि मनुष्य अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए अनगिनत दीवारें खड़ी करता है। ये दीवारें केवल ईंट-पत्थर की नहीं, बल्कि जाति, धर्म, भाषा, देश और विचारों के भेदभाव और बँटवारे की दीवारें भी हैं।

(ii) यह पंक्ति मनुष्य के अहंकार और प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति को दर्शाती है। ब्रह्मांड में एक कण के समान होने के बावजूद वह दूसरे मनुष्यों पर अपना अधिकार जताना चाहता है और खुद को उनका मालिक समझता है।

(iii) इस कथन से कवि का तात्पर्य है कि मनुष्य की बँटवारे की प्रवृत्ति इतनी गहरी है कि वह देशों और समाजों की तो बात ही क्या, एक छोटे से कमरे में रहने वाले दो लोगों के बीच भी मनमुटाव, स्वार्थ और अहंकार की दीवार खड़ी करके दो अलग-अलग दुनिया बना लेता है।

4. दीर्घ उत्तरीय उत्तर: (i) कविता में कवि ने मनुष्य के चरित्र के गहरे विरोधाभास को उजागर किया है।

- **मनुष्य का छोटापन:** कविता का पहला भाग यह स्थापित करता है कि ब्रह्मांड की विराटता के सामने मनुष्य का अस्तित्व एक कण से भी छोटा है। वह एक कमरे से भी छोटा है, जो घर में है, घर मुहल्ले में... और यह क्रम लाखों ब्रह्मांडों तक जाता है। इस अनुपात में आदमी लगभग नगण्य है।
- **मनुष्य का अहंकार:** कविता का दूसरा भाग इस सत्य को जानने वाले मनुष्य के व्यवहार पर टिप्पणी करता है। अपनी इस लघुता को समझने के बजाय, मनुष्य ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ और घृणा में डूबा रहता है। वह अपने और दूसरों के बीच अनगिनत दीवारें खड़ी करता है, खुद को दूसरों का स्वामी बताता है और एक छोटे से कमरे में भी बँटवारा करके दो अलग दुनिया बना लेता है। यही विरोधाभास है कि जो मनुष्य सृष्टि में सबसे छोटा है, उसका अहंकार सबसे बड़ा है। वह अपनी मूर्खता को भूलकर खुद को सबसे महत्वपूर्ण समझता है और अलगाव तथा प्रभुत्व स्थापित करने में लगा रहता है।